रोहतांग में मनाली-लेह राजमार्ग पर टनल के निर्माण का सपना केंद्र सरकार की शीर्ष प्राथमिकताओं की वजह से महज छह साल में ही साकार हो गया। 9 किमी से भी लंबे इस टनल की एक उपलब्धि यह है कि भारत के आत्मनिर्भर बनने के संकल्प का चमकता उदाहरण बन गया। अब स्थानीय लोगों के लिए यह नई जीवन रेखा जिंदगी की राह आसान करेगी, वहां सषस्त्र बलों को भी दूरदराज सीमावर्ती क्षेत्रों में पहुंचना सहज होगा।

राष्ट्र को समर्पित- अटल टनल

सर्दियों में बर्फबारी की वजह से रोहतांग दर्रे के निकट मनाली-लेह हाईवे पांच-छह महीनों के लिए ठप पड़ जाता था और यह क्षेत्र देश के अन्य हिस्सों से पूरी तरह कटा रहता था। लेकिन अब यह सड़क पूरे साल के लिए खुल गई है। रोहतांग दर्रे को बाईपास करने के लिए मनाली लेह हाईवे पर टनल के निर्माण का स्वपन केंद्र सरकार की शीर्ष प्राथमिकताओं की वजह से साकार हो पाया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 3 अक्टूबर को इसे राष्ट्र को समर्पित किया। इस टनल के निर्माण के साथ ही लद्दाख में सेना को हथियार और रसद की आपूर्ति सहज होगी। स्थानीय किसान, बागवानी और अन्य व्यवसायों से जुड़े लोगों को देश के अन्य हिस्सों के बाजार से साल भर जुड़े रहने की सुविधा मिल पाएगी। इस सुरंग की नींव 26 मई 2002 को अप्रोच रोड के शिलान्यास के साथ दिवंगत प्रधानमंत्री और भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी ने रखी थी। लेकिन बाद की सरकार ने इसे प्राथमिकता की श्रेणी में शायद नहीं रखा। वर्ष 2014 में नई सरकार ने इसे अपनी शीर्ष प्राथमिकताओं में में रखा। तब विशेषज्ञों ने इसे पूरा करने 26 साल का समय बताया था, लेकिन महज छह साल में दुनिया की सबसे ऊंची और लंबी यह रोड टनल भारत के आत्मनिर्भर बनने के संकल्प का एक चमकता उदाहरण है। पिछले साल 25 दिसंबर को प्रधानमंत्री मोदी ने इस रोहतांग टनल को अटल टनल का नाम दिया था।

सीमावर्ती क्षेत्र हो रहे सशक्त

अटल टनल बॉर्डर इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने वाली है, जो बॉर्डर में कनेक्टिविटी का सबसे अद्भुत उदाहरण है। 2002 उद्घाटन के बाद से 2013-14 तक महज 1300 मीटर टनल का काम हो पाया था। उसी रफ्तार से काम होता तो यह 2040 में जाकर पूरा होता। लेकिन सरकार ने सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) की बाधाओं को दूर करते हुए उसे गति दी। काम में देरी की वजह से इसकी लागत भी 950 करोड़ रु. से बढ़कर 3200 करोड़ रु. पहुंच गई। प्रधानमंत्री ने उद्घाटन के मौके पर कहा भी, सीमावर्ती क्षेत्रों की कनेक्टिविटी सीधे देश की रक्षा जरूरतों से जुड़ी होती है। लेकिन इसके लिए जिस तरह की राजनैतिक इच्छाशक्ति की जरूरत थी। दुर्भाग्य से वैसी दिखाई नहीं गई । मौजूदा सरकार ने सीमावर्ती क्षेत्रों में विकास को रफ्तार दी है। जिसका उदाहरण असम में बॉगीबील ब्रिज, पूर्वोत्तर में कनेक्टिविटी, बिहार में कोसी महासेतु, हिमालय क्षेत्र में, चाहे वो हिमाचल, जम्मू कश्मीर, कारगिल-लेह-लदास, उत्तराखंड, सिक्किम या अरुणाचल प्रदेश हो, दर्जनों प्रोजेक्ट परे किए जा चुके हैं। अनेकों प्रोजेक्ट्स पर तेजी से काम चल रहा. है। अटल टनल का निर्माण भी सहज नहीं था टनल के निर्माण में 587 मीटर लंबे नाले के रूप में कठिन समस्या आई। इसमें 8 हजार लीटर प्रति मिनट पानी के बहाव ने निर्माण में बाधा डाली। यह समस्या अपने आप में विश्व की अनूठी चुनौती थी। जिसको नवीनतम तकनीकों और आधुनिकतम उपकरणों से दूर किया गया। समय पर कार्य पूरा करने के लिए 3 हजार श्रमिक और बीआरओ के 650 कर्मियों ने एकजुट होकर तीन शिफ्ट में काम किया। प्रधानमंत्री मोदी के विजन के अनुरूप अटल टनल सामरिक मजबूती एवं हिमाचल-लद्दाख के लोगों के सर्वांगीण विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगी। इससे लोगों के चेहरे पर मुस्कान सहज ही देखी जा सकती है। अब अगले चरण में बीआरओ का फोकस शिंकुला टनल पर होगा, जिसे तीन साल में पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। इससे लेह के लिए हर मौसम में कनेक्टिविटी और सहज हो जाएगी।

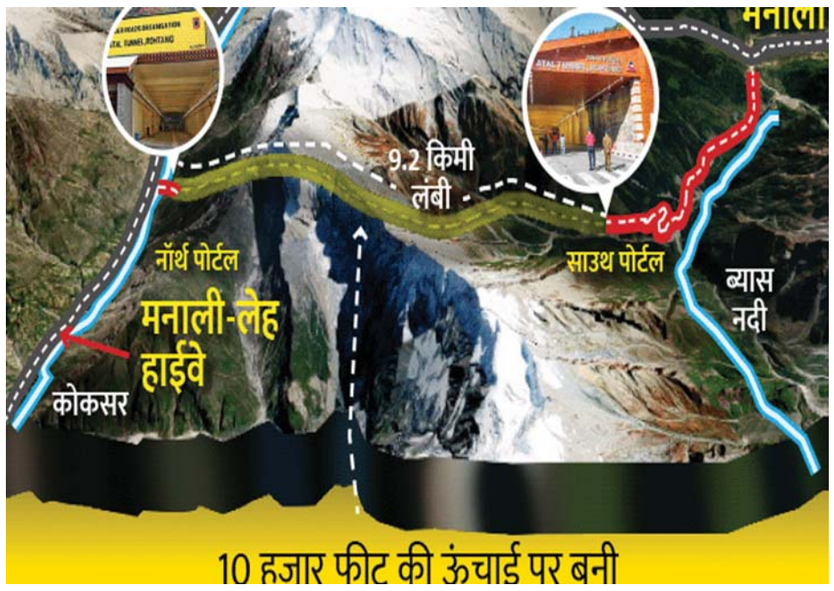

क्यों खास है

- अटल टनल बनने से लद्दाख में तैनात भारतीय सेना को काफी मदद मिलेगी। अब सर्दियों में भी हथियार और रसद की आपूर्ति आसानी से हो सकेगी।
- टनल सशस्त्र बलों को लद्दाख तक पहुंचने में बेहतर कनेक्टिविटी प्रदान करेगी।
- अटल टनल रोहतांग से जनजातीय क्षेत्र लाहौल-स्पीति जिले की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होगी।
- अटल टनल रोहतांग बनने से पर्यटन नगरी मनाली से लेह के बीच दूरी 46 किमी कम हुई।
- अटल टनल 10171 फीट की ऊंचाई पर बनी इसे रोहतांग दर्रे से जोड़कर बनाया गया है।
- यह दुनिया की सबसे ऊंची और सबसे लंबी रोड टनल है।
- टनल को अधिकतम 80 किमी प्रति घंटा के साथ 3 हजार कार और 1500 ट्रकों के यातायात घनत्व के लिए तैयार किया गया है।
- घोड़े की नाल के आकार में सिंगलट्यूब और डबल लेन वाली टनल जिसकी ओवरहेड निकासी 5.525 मीटर है।
- इसमें फायर प्रूफ आपातकालीन निकास टनल भी है, जिसे मुख्य सुरंग में बनाया गया है।
- यह टनल सेमी ट्रांसवरस सिस्टम, स्काडा नियंत्रित अग्निशमन, रोशनी और निगरानी प्रणाली सहित अत्याधुनिक इलेक्ट्रो मैकेनिकल प्रणाली से लैस है।